ISSN 2582-5429(online)

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2020 VOL.02. ISSUE II (B)

Modern Trends in Literature

(Marathi, Hindi & English)

www.aimrj.com

Email ID. aimrj18@gmail.com

संत नामदेव के हिंदी मराठी अभंग

प्रा.डॉ.मल्लिनाथ बिराजदार

जवाहर महाविदयालय,अणदूर

मो.नं.9890473203

राष्ट्र संत तरूण सागर जी.के.शब्दों में –

"संत अध्यात्म के आकाश में इन्सानियत का इंद्रधनुष्य है।

.संत सौहार्द के सितार पर सद्भाव का संगीत है।

संत अपनत्व की आंगन में, आत्मियता की आराधना है।

' महाराष्ट्र संतो की भूमि है '। अनेक महान संतो ने इस भूमि को पावन किया इनके कर्म–कर्तृत्व से भक्ति संम्प्रदाय का विकास हुआ। जन.मानस में एक चेतना की लहर दौड गयी, अंधकार नष्ट हुआ । समाज में नया परिवर्तन हुआ।

'योगियों का योगी, ज्ञानियों का राजा' संत ज्ञानेश्वर ने महाराष्ट्र में भागवत धर्म का और सम्प्रदाय की नीव डाली 'भक्ति' सम्प्रदाय की झंडा पहराई । संत नामदेव ने भागवत सम्प्रदाय का झंडा कंधेपर लेकर पंजाबतक पहुँचाया । डॉ.वि.भि. कोलते के अनुसार 'महाराष्ट्र में संतो ने भक्तिरूपी जल मेघ की इतनी वृष्टी की जिसके मधुर जल के सेवन मे आज भी महाराष्ट्र की जनता तृप्त रहती है। '

म्हाराष्ट्रीय संतो में नामदेव का स्थान अनन्य साधारण हे संत नामदेव ने महाराष्ट्र में जन्म लेकर यहॉ उन्होंने भक्ति की खेतो का और यहॉ के बीज राजस्थान और पंजाब के भूमि में बोया। पंजाब स्वयं खत और पानी डालकर उसे फलाया, फुलाया उनका कार्य अलौकिक है।

संत नामदेव ने ज्ञानेश्वरआदि संतो सहित उत्तर की पहली तीर्थयात्रा की । ज्ञानेश्वर के संजीवन समाधि के बाद फिर उत्तर की तीर्थ यात्रा की । भागवत धर्म का झंडा उतर में पहुँचायी। वारकरी सम्प्रदाय के आदि प्रचारक के रूप में उन्होंने महत्वपूर्ण कार्य किया। अनुभव के बलपर उन्होंने मराठी अंभंग का सृजन किया। मराठी के साथ हिन्दी के अभंग भी उपलब्ध है।

'श्री गुरू ग्रंथसाहेब' नामक शीख धर्मग्रंथ में संत नामदेव हिंदी अभंग पद उपलब्ध हुए है। श्री कृष्ण गंगाधर दिवाकर के शब्दो मं – " पंढरपुर,पुणे, धुळे, तंजावर, बिकानेर, जयपुर,जोधपुर, वाराणसी आदि अनेक स्थानों में नामदेव के स्फूट हिंदी पद के पांडुलिपि संग्रह मिलते हैं। पंजाब विश्वविद्यालय के प्राध्यापक मोहनसिंग दीवांनं ने सर्वप्रथम संत नामदेव के हिंदी पदो का छोटा सा संग्रह प्रकाश्ति कर, उनकी हिंदी, कविता की ओर रसिक पाठकों को आकर्षित करने का महत्वपूर्ण कार्य किया है ऐसा दिखता है।

संत नामदेव ने प्रमुख रूप से भागवत धर्म प्रचार प्रसार के लिए ही हिंदी अंभंग रचना की। वे उतर भारत में करीब–करीब २० साल प्रचार किया।

गुरू ग्रंथसाहेब में संत नामदेव के ६९ पद उपलब्ध है। इन पदो में विठ्ठल भक्ति, सगुण–निर्गुण भक्ति, भागवत सम्प्रदाय का दार्शनिक विवरण हैं। संत नामदेव के हिंदी काव्य में रामभक्ति, अद्वैत भावना, जाति–पॉति भेद आदि के दर्शन होते है। उनकी हिंदी कविता

©Copyright 2020 AMRJ. All Rights Reserved

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

ISSN 2582-5429(online)

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2020 VOL.02. ISSUE II (B)

Modern Trends in Literature

(Marathi, Hindi & English)

www.aimrj.com

Email ID. aimrj18@gmail.com

सुमधुर, रसयुक्त , और प्रासादिक है। उनके पदो में भक्तिरस ओत–प्रोत भरी हुई हैं। खांड के रोटी के अनुसार मिठी लगती है।

सामजिक भाव :–

संत नामदेव ने समाज में स्थित जॉति–पॉति, स्पृश्य, अस्पृश्य, उच्च नीच, अमीर–गरीब आदि पर चिंता प्रकट की है। समाज में इन्सान को इन्सानियत से जीना चाहिए। भक्ति मार्ग का अवलंब कर समाज में शांति निर्माण करना ही इनके अभंग का उद्देश्य है। समाज को फटकारते हुए जाति–पॉति भावनासे उपर उठना चाहिए। इस प्रकट करते हुए उन्होंने कहा है कि –

''का करौ जाती का बारौ पांति ।
राजाराम सेऊं दिन राती ।।

आगे वे भगवान से कहते है

''मेरी कौन गति गुसाई तुम जगत भरन देवा।
जन्महीन करम छीन भूलि गयों सेवा ।। २

हिंदी पदो में स्थित उपदेश पर वाणी :–

संत नामदेव के हिंदी पद नितांत सुंदर होकर उनके काव्य मे भावपूर्णता के दर्शन होते है। परमेश्वर विषयक भक्ति–भाव के माध्यम से ही उन्होंने जनसामान्य को उपदेश दिया है। संत नामदेव मन को केंद्र में रखकर उपदेश करते हुए कहत है।

'कहि मन गोंविद गोंविद। '
काहे रे मन भूला फिरई। चेति न राम चरण चित्र धरही।।
नरहरि नरहरि जपिरे जीयरा। अवधि काल दिन आवें नियरा।।''
जपि रामनाम महामंत्र । राम बिना नहीं मुक्ति अनंत्र।।[3]

सामान्य आदमी को उपदेश करते हुए संत नामदेव कहते है। मानव जीवन क्षणभंगुर है, बार बार यह जन्म प्राप्त नहीं होता, इसी जन्म में प्रभू का गुणगान कर जीवन सार्थ करना चाहिए।

संत नामदेव के हिंदी पदो में भी विठ्ठलभक्ति अत्यंत सुरस चित्रित हुई है। संत नामदवे कहते है कि माता–पिता, ज्ञान ध्यान जॉति–पॉति सबकुछ विठठल ही है। वे कहते है –

राम विठ्ठला । हम तुम्हारे सेवक ।१।।
बालक बोला माई विठ्ठल बाप विठ्ठल । जाति–पाति विठ्ठल
ज्ञान विठ्ठल ध्यान विठ्ठल । नामा का स्वामी प्राण विठ्ठल ।। ४

संत नामदेव की भक्ति–भावना अमर्याद है। उसे भाषा का बंधन नही । उनके हिंदी पदो में नाम महिमा, भक्ति–भावना, सत्संग, सगुण–निर्गुण, राम–कृष्ण आदि का सुंदर वर्णन चित्रित किया गया है। संत नामदेव वारकरी सम्पदाय में मराठी अभंगो का जो स्थान निर्माण किया वही स्थान हिंदी पदो के माध्यम से गुरू ग्रंथ साहेब में '' नामदेव की गुरू बानी '' भक्तिमार्ग में अत्युच्च स्थान प्राप्त किया है। डॉ.रा.ग. तुळपुळे के अनुसार '' नामदेव की परंपरा मे ही आगे कबीर रामानंद निर्माण हुए। पंढरपुर के इस संत कवि का

©Copyright 2020 AMRJ. All Rights Reserved

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

ISSN 2582-5429(online)

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2020 VOL.02. ISSUE II (B)

Modern Trends in Literature

(Marathi, Hindi & English)

www.aimrj.com

Email ID. aimrj18@gmail.com

पंजाब पर के उपकार कभी भी न मिटनेवाले हैं। संत नामदेव ने यह सब भक्ति के लिए किया । इसलिए नामदेव एक अलौकिक भागवत भक्त है।''[५]

संत नामदेव के अलौकिक भक्तिभाव के दर्शन हिंदी पदों से होते हैं। सहज, सरल और सीधे शब्दों के माध्यम से उनके अंत:करण में स्थित भाव सहज प्रकट हुए है। उनके हिंदी पदों में स्थित अनोखे भाव माधुर्य इस प्रकार प्रकट होते हैं।

''हरि नाव हीरा हरि नाव हीरा ।। हरि नाव जाति हरि नाव पाति।
हरि नाव लेन मिटे सब पीरा। हरि नाव सकल जीवन में क्रांति ।।६

हरि नाम लेने से दर्द मिटता है, जॉति–पॉति की भावना नष्ट हो जाती है और जीवन में क्रांति की भावना उदित हो जाती है। जीवन का मार्ग बदल जाता है। जीवन उल्लास और आनंद से ओत–प्रोत भर जाता है ।

राम भक्तिपर काव्य –.

मराठी अभंग में जो राम भक्ति प्रकट हुई है। वही हिंदी पदो में भी दिखाई देती है। उन्होंने राम नाम का प्रचार किया है। 'राम' वैष्णवौ के देवता होने के कारण – राम–कृष्ण और हरि–हर में कोई भेद नहीं इस दार्शनिक चिंतन को प्रकट किया है। वे कहते है कि मानव जीवन की सफलता ही राम नाम मे है।

राम नाम षेती राम नाम बारी । हमारे धन बाबा धनवारी ।।
या धन की देषहु अधिकाई । तसकर हरै नलागै भाई ।१।।
छहदिसि राम रहया भरपूरि संतनि नीयरे साकत दूरि ।।२।।
नमदेव कहै मेरे किसन सोई। कूंत मसाहति करै न कोई।।३।। [७]

.संत रामनाम की ही खेती करते है। रामनाम ही ऐसा धन है जिस की चोरी कोई नहीं कर सकता । चराचर सृष्टि मे राम है। भक्त को रामनाम स्मरण में ही रत होना चाहिए।

राम नाम खेती, राम सो धन ताकी, राम रमे रमि,राम संभारै, राम सो नामा, रामनाम जपियो आदि पदो में संत नामदेव की रामभक्ति प्रकट हुई है।

डॉ.इंद्र पवार के शब्दों में– हिंदी तथा मराठी के इन सन्तो के सत प्रयत्नों का शुभ परिणाम निकलता कि, प्रत्येक जाति में उच्च कोटि के संत सज्जन निर्माण हुए । प्रत्येक जाति में इस भक्ति काल में सन्त माला का अविर्भाव हुआ। जो अपने सूरभित पुष्पों से भारतीय समाज जीवन को सुगन्धित, आनंदित और सुनिर्माण बनाती हैं इन मराठी संतो में नामदेव दरजी थे, सावता माली थे, तुकाराम कुणबी थे, नरहरी सुनार थे, गोरोबा कुम्हार थे और चोखोबा महार थे।

म्हाराष्ट्र में इन सभी श्रेष्ठ संतो को समान रूपेण समादार दिया जाता है, यही बात हिंदी साहित्य के क्षेत्र में दिखाई देती है। आध्यात्मिक क्षेत्र की इस सामाजिक समता के परिणाम स्वरूप ही मस्त मौला फक्कड राम निर्गुण कबीर जुलाहा जाति को अलंकृत कर सके। सन्त रैदास चमार होकर भी आदर तथा श्रदधा समेत जनताद्वारा पूजनीय एवं वंदनीय हुए। ''[८]

संत नामदेव के मराठी चरित्र पर अभंग, पारमार्थिक जीवनपर अभंग, नाम महात्म्य, कीर्तन महात्म्य, संत महात्म्य, पंढरी महात्म्य, विठ्ठल महात्म्य, उपदेशपर अभंग, संत चरित्र

©Copyright 2020 AMRJ. All Rights Reserved

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

ISSN 2582-5429(online)

AMRJ

Akshara Multidisciplinary Research Journal

Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2020 VOL.02. ISSUE II (B)

Modern Trends in Literature

(Marathi, Hindi & English)

www.aimrj.com

Email ID. aimrj18@gmail.com

पर अभंग, हिंदी अभंग आदि पर अभंग लेखन किया है। अभंग लेखन से पहले, गुरूकृपा के बिना नामदेव को अपना जीवन व्यर्थ लगा। उन्होंने विठ्ठल से 'वाल्मीकि' जैसी काव्य निर्मिति की प्रतिज्ञा की वे कहते है, ''पांडूरंग, आज तक का मेरा जीवन व्यर्थ गया, मुझे बहुत दर्द हो रहा है, मै वाल्मीकिसा काव्य निर्माण करूँगा पाडूरंग मै तेरा सही भक्त हो तो ही मेरी प्रतिज्ञा सफल होगी । मै शतकोटि अभंग रचना करूंगा । इस में अगर मैं सफल न हुआ तो जिव्हा काटकर आप के समक्ष रखूँगा। ''९

''शतकोटी तुझे करीन अभंग ।
नमा म्हणे जरी न होता संपूर्ण जिव्हा उतरीन तुझपुढे ।

संत नामदेव की भीष्म प्रतिज्ञा फलित हुई विठ्ठल कृपा से अभंगनिर्मिति की संत महात्म्य पर अभंग में वे कहते हे।

''संतापायी माथा धरिता सद्भावे । तेणे भेटे देव आपोआप।।
म्हणवूनि संतां अखंड भजावे । तेणे भेटे देव आपोआप।।
साधुपाशी देव काम धंदा करी। पीतांबर धरी वर छाया।।
नमा म्हणे देव इच्छी संत संग । आम्हा जिवलग जन्मोजन्मी।।

संत संसाररूपी अंध:कार में भटके हुए लोगों के लिए दीपस्तंभ का काम करते है, मार्ग दिखाते है। वेदकुमार वेदालंकार के शब्दों में — '' संतो की तीर्थयात्रा सदाचार की शिक्षा थी, आचरण का पाठ था। यह संत शुध्द एवं सात्विक भावों की सजीव मूर्ति थे । क्रोध इनके पास भी नहीं फटक ने पाता या, लोभ, मत्सर द्वेष इनसे कोसो दूर थे । एक —दूसरे के चरण में नमस्कार करते हुए उसी में विठ्ठल के दर्शन पाते थे । वर्ण संकर न करते हुए जाति—भेद को यथावत मानकर इन्होंने यही कहा कि व्यवसाय, जाति की भिन्नता चाहे हो, किंतु हम सब है उस एक ईश्वर की संतान ।।

इस प्रकार संत नामदेव की अभंग गाथा परमेश्व की भक्तिगाथा है। उनके अनुसार भक्ति ही ज्ञानयोग है। आत्मज्ञानी नामदेव अभंग के माध्यम से प्रकट हुए
है। नामदेव के अभंग प्रासंगिक, आत्मबोल हैं एक साक्षात्कारी, संत की, भाव मालिका है। उनका प्रत्येक अभंग आत्मलेख है। अंत में डॉ.बी.एन.पाटील के शब्दो में — ''भक्ति और कविता, करूणा और वात्सल्य, आर्तता और सौहार्दपूर्णता से ओत—प्रेत नामदेव की अभंगवाणी मराठी मन की अमृत संजीवनी है।। [१२]

इस प्रकार कर्म ज्ञान और भक्ति की अमृत संजीवनी देनेवाले संत नामदेव संत ज्ञानेश्वर के समकालीन थे और उम्र में उन से पांच साल बडे थे वे संत ज्ञानेश्वर के साथ पूरे महाराष्ट्र का भ्रमण किए, भक्ति—गीत रचते और जनता —जनार्दन को समता और प्रभु भक्ति का पाठ पढाया । संत ज्ञानेश्वर के बाद इन्होंने पूरे भारत का भमण किया। इन्होंने मराठी के साथ ही साथ हिन्दी में भी रचनाएँ लिखी। नामदेव जी ने जो वाणी उच्चारण की वह गुरू ग्रंथ साहिब में भी मिलती है। बहुत सारी वाणी दक्षिण वाणी उच्चरण की वह गुरू ग्रंथ साहिब में भी मिलती है। बहुत सारी वाणी दक्षिण व महाराष्ट्र में गाई जाती है। आपकी वाणी पढने से मन को शांति मिलती है व भक्ति की तरफ मन लगता है।

संदर्भ

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

©Copyright 2020 AMRJ. All Rights Reserved

ISSN 2582-5429(online)

Akshara Multidisciplinary Research Journal
Peer-Reviewed & Refereed International Research Journal

July-September 2020 VOL.02. ISSUE II (B)

Modern Trends in Literature
(Marathi, Hindi & English)

www.aimrj.com
Email ID. aimrj18@gmail.com

१.राष्ट्रसंत तरूण सागर — कडवे प्रवचन से
२.डॉ.कोलते वि.भि— संत नामदेव कालीन महाराष्ट्र जीवन
३.प्राचार्य बी.एन.पाटील संत नामदेव — अभंग गाथा ,तरंग दर्शन प्रशांत पब्लिकेशन,जलगाव प्रथम संस्करण २००३ पृ.११२
४.वही
५.डॉ.श.ग.तुळकुळे — संत नामदेव कालीन महाराष्ट्र जीवन.
६. प्राचार्य बी.एन.पाटील संत नामदेव — अभंग गाथा ,तरंग दर्शन प्रशांत पब्लिकेशन,जलगाव प्रथम संस्करण २००३ पृ.११२
७.प्राचार्य बी.एन.पाटील संत नामदेव — अभंग गाथा ,तरंग दर्शन प्रशांत पब्लिकेशन,जलगाव प्रथम संस्करण २००३ पृ.११२
८.डॉ.पवार इंद्र— हिंदी और मराठी काव्य,युनिव्हर्सिटी पब्लिकेशन, कर्मपुरा नई दिल्ली संस्करण १९९८ पृ.प्रस्तावना
९. प्राचार्य बी.एन.पाटील संत नामदेव — अभंग गाथा ,तरंग दर्शन प्रशांत पब्लिकेशन,जलगाव प्रथम संस्करण २००३ पृ.११२
१०.संत नामदेव अभंग गाथा— अ.८५८.
११.प्रा.वेदालंकार वेदकुमार — मराठी संतकाव्य, विकास प्रकाशन कानपुर प्रथम संस्करण २०००. पृ.२१
१२. प्राचार्य बी.एन.पाटील संत नामदेव — अभंग गाथा ,तरंग दर्शन प्रशांत पब्लिकेशन,जलगाव प्रथम संस्करण २००३ पृ.१२६

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

©Copyright 2020 AMRJ. All Rights Reserved